Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Vol. 2, Issue-2 (April-June, 2026), pp.138-144, ISSN: 3107-5088, www.cognitivethinking.in

अमरकान्त के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना और पक्षधरता का स्वरुप

डॉ.रामायन राम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय नगला काशी, धौलाना, हापुड़, उ. प्र.

Article/Interview: Received: 20/05/2026, Accepted: 27/05/2026, Published:30/05/2026.
D.O.I. https://doi.org/10.5281/zenodo.20529584

© 2026 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited. (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

शोध - सार: अमरकान्त हिन्दी कथा-साहित्य के उन विरल रचनाकारों में हैं जिन्होंने निम्नवर्ग – मजदूर, किसान, छोटे कर्मचारी, दलित, और हाशिये पर जीते लोग – को अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया। उनकी दृष्टि न तो भावुकता से भरी करुणा है, न ही वैचारिक नारेबाजी – बल्कि एक ठंडी, तीखी यथार्थवादी पकड़ है जो पाठक को भीतर तक झकझोरती है। नई कहानी आंदोलन के शहरी यथार्थ बनाम ग्रामीण यथार्थ के द्वैत के बीच अमरकान्त अपने रास्ते पर चुपचाप चलते रहे हुए शहरी मध्यवर्ग और ग्रामीण सामंती समाज के बीच संक्रमणकालीन स्थिति में मौजूद क़स्बाई निम्न मध्यवर्ग के जीवन की सच्चाइयों को अपनी कहानियों में ढालते रहे। उनके यहाँ जो मध्यवर्ग चित्रित है वह मोहन राकेश, भीष्म साहनी ,राजेंद्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों के मध्य वर्ग से अलग है। यह वह वर्ग है जो न तो पूरी तरह नगरीय बोध से युक्त है और ही ग्रामीण जीवन के अभावों से रु ब रु है। इस वर्ग के लोग आम तौर पर छोटे कस्बों, तहसील और जिला मुख्यालयों के आस पास रहते हुए छोटी -मोटी नौकरियां करते हैं या छोटे व्यापारी हैं। इनमें छोटे स्तर के वकील, क्लर्क, अध्यापक और किरानी जैसे तबके के लोग हैं, जो गांवों से निकल कर शहरों की ओर बढ़ रहे हैं, इसी प्रक्रिया में गावों का नगरीकरण हो रहा है। अमरकान्त गांव से नगर के इस संक्रमण के मुख्य संचालक शक्ति निम्न मध्यवर्ग के कथाकार हैं। इसलिए उनकी कहानियों में न तो नई कहानी के नारों के अनुरूप संत्रास, अकेलापन, बदलते मानवीय सम्बन्धों की अभिव्यक्ति होती है न ही ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलावों, उभरती हुई नई सामाजिक शक्तियों और ज़मींदारी उन्मूलन के बाद के द्वन्द्व नज़र आते हैं। इसीलिए उनकी कहानियों के पात्र एक जगह स्थिर , जड़ और यथास्थितिवादी नज़र आते हैं। पुराने और नये मूल्यों के द्वन्द्व में फंसा हुआ निम्न मध्यवर्ग दरसल प्रतिक्रिया के विचारों का मुख्य वाहक होता है , ठीक वैसे ही जैसे ग्रामीण संरचना में सबसे गर्हित सामंती विचार और संस्कार का वाहक मध्यम और छोटा किसान तबका होता है।

मुख्य शब्द - अमरकांत, कथा साहित्य,नई कहानी, निम्नवर्गीय प्रसंग, मध्यवर्गीय चेतना,

प्रस्तावना - अमरकान्त ने अपनी कहानियों में बेहद सरलता और सजगता से इस क़स्बाई निम्न मध्यवर्ग की प्रतिक्रिया को अपनी कहानियों में व्यक्त कर दिया है। इस तरह बिना किसी दावे और नारे के वे समाज के सबसे निचले तबके के प्रति अपनी पक्षधरता जता जाते हैं। वरिष्ठ आलोचक प्रो. राजेंद्र कुमार लिखते हैं - " अमरकांत की रचनाएँ विचारधारा और अनुभव की एकात्मकता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्हें विशेष रूप से साधारण मध्यवर्गीय

जीवन के सामाजिक यथार्थ का असाधारण चितेरा कहा जाता है। ‘ प्रतिबद्धता’ और ‘पक्षधरता’ के स्वर किसी घोषणा के रूप में उनकी रचनाओं में नहीं आते। हाँ ऐसे अंत:सूत्र अवश्य रहते हैं जो उनकी पक्षधरता को संकेतित कर देते हैं। वे विचारधारात्मक परिप्रेक्ष्य को अपने कथानुभव के बीच से उभरने देते हैं। विचारधारा उनके यहाँ प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, अमूर्त ‘दर्शन’ का भी विषय नहीं। पर विचारधारा उनके कथानुभव से सर्वथा ‘अस्पृश्य’ हो , या उनकी संवेदना से सर्वथा ‘निर्वासित’ हो , ऐसा भी नहीं है।“ 1

लगभग सभी आलोचकों ने अमरकान्त को मध्यवर्ग का चितेरा कहा है। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग का संघर्ष, उसकी वंचनाएं , अभाव और हताशा का बेहद मार्मिक चित्रण हुआ है। दोपहर का भोजन, डिप्टी कलक्टरी, इंटरव्यू जैसी कहानियाँ इस हवाले से बहु चर्चित और बहुपठित हैं।लेकिन यदि समग्रता में अमरकान्त के रचनाकर्म को देखें तो हम यह पाते हैं कि उनकी दृष्टि मध्यवर्ग की बहुआयामी आलोचना की दृष्टि है। वे हिंदी कहानी में मध्यवर्ग के सबसे बड़े आलोचक हैं, कविता में यह काम मुक्तिबोध ने किया । उच्च वर्णीय शहरी मध्यवर्ग - निम्न मध्यवर्ग की चालाकियाँ, अवसरवाद, पाखंड और निम्न तबके के प्रति उनके द्वारा किए जाने वाले षड्यंत्रों का जिस तरह का पर्दाफाश अमरकान्त की कहानियों में होता है वह अद्वितीय है। इस मामले वे सीधे तौर पर प्रेमचंद की परम्परा से जुड़ते हैं। प्रेमचंद ने अपने समय में हिंदी पट्टी के समाज में मौजूद जातिवादी , सामंतवादी विभेदकारी दुराग्रहों को बेलाग ढंग से चित्रित किया था। एक तरह से वह प्रेमचंद द्वारा अपने वर्ग की आत्मालोचना थी। इसी तरह अमरकान्त ने मध्यवर्ग जहां से वे खुद आते थे, की आत्मालोचना की है। उनकी कहानियों में सीधे तौर पर जातिवाद और वर्ण व्यवस्था के ख़िलाफ़ प्रतिरोध के संदर्भ नहीं मिलते, उनके निम्नवर्गीय पात्रों की जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण नहीं होती, अक्सर ऐसे पात्र बेहद दमित, पददलित और मानवीय गरिमाहीन होते हैं। अमरकान्त अपनी कहानियों में पात्रों और परिस्थितियों के ज़रिए एक द्वन्द्व रचते हैं जिसमें कथित सभ्य समाज और भद्र लोक की नीचताओं को उजागर कर देते हैं। उनकी एक कहानी का शीर्षक है ‘दो - चरित्र’ । इसमें उन्होंने शहरी बाबुओं के मुहल्ले में जमा हुए भिखारियों और पढ़े लिखे सम्भ्रांत व्यक्तियों के बीच का द्वन्द्व दिखाया है, इस कहानी में उन्होंने कथित सभ्य लोगों के संकीर्ण सोच और पूर्वाग्रहों को बेहद मामूली किंतु महीन व्यंग्यात्मक ढंग से सामने रख दिया है। उनका कहानियों में मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के विपरीतध्रुवीय चरित्रों का आमना - सामना होता है। हालाँकि उनके निम्नवर्गीय पात्र कोई एहतेजाज या विद्रोह करते नज़र नहीं आते बल्कि वे आत्मसम्मान विहीन गुलामों की तरह व्यवहार करते हैं, उनकी हीनता और पशुवत् जीवन व्यवहार के आइने में कथित सभ्य समाज की अमानवीयता प्रकट और प्रत्यक्ष हो उठती है, इसी प्रक्रिया में लेखक का पक्ष और प्रतिबद्धता प्रतिबिम्बित हो उठती है।

विषय विस्तार: आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने अमरकान्त को कफ़न की परम्परा का कथाकर कहा है। ‘कफ़न’ और ‘ज़िन्दगी और जोंक’ में मौजूद द्वंद्वात्मक दृष्टि के आधार पर उनका कहना है कि अमरकान्त ने कहानी का सूत्र कफ़न से पकड़ा है। घीसू - माधव की असहायता और उसके प्रतिकार स्वरूप उनके काइयाँपन और रजुआ के दैन्य और उसकी जिजीविषा के बीच साम्य को रेखांकित करते हुए त्रिपाठी जी ने उन्हें सजातीय पात्र बताया है। त्रिपाठी जी समेत लगभग सभी समीक्षकों ने न जाने क्यों रजुआ के दैन्य और उसके अमानवीय स्थितियों में ज़िंदा रहने की कोशिशों का महिमामंडन किया है, और इस कोशिश को ही ‘ज़िन्दगी और जोंक’ कहानी का हासिल बताया है। लेकिन अगर वैकल्पिक नज़रिए से देखें तो यह कहानी रजुआ की जिजीविषा के बारे में नहीं बल्कि शिवनाथ, जमनालाल और उस मुहल्ले में रहने वाले तमाम सभ्य लोगों की नीचताओं के बारे में है।आलोचकों की निगाह में

रजुआ का दैन्य, मुहल्ले में स्वीकृत होने के लिए की जानी वाली हरकतें, जानवरों जैसी उसकी चेष्टाएँ और ज़िंदा रहने की कोशिशें तो आती हैं, लेकिन कथित सभ्य बाबू लोगों की चालाकियाँ और पाखंड ओझल हो जाता है। एक अधमरे गरीब इंसान से पूरे मुहल्ले द्वारा जूठन और मामूली पैसे के बदले काम कराना, बात - बेबात उसकी पिटायी करना और बीमार होने पर उसे मरने के लिए छोड़ देना ये कहानी में मौजूद ऐसे तथ्य हैं जिसकी तरफ़ अमरकान्त ने बेहद प्रमुखता से इशारा किया है। इन प्रसंगों में लेखक ने बहुत महीन, धारदार व्यंग्य और मध्यवर्ग के प्रति गहरी आलोचनादृष्टि का प्रयोग किया है। इस संदर्भ में उदाहरण स्वरूप एक प्रसंग का ज़िक्र प्रासंगिक है। शिवनाथ बाबू साड़ी चोरी के आरोप में पूरे मुहल्ले को साथ लेकर रजुआ की पिटायी कर रहे होते है, इसी बीच पता चलता है कि साड़ी घर में ही मिल गई है।यहाँ इस परिस्थिति में अमरकान्त जी ने शिवनाथ की प्रतिक्रिया को जिस रूप में अभिव्यक्त किया है वह इस कहानी का सबसे अर्थपूर्ण प्रसंग है। शिवनाथ कहता है - "इस बार तो साड़ी घर में ही मिल गई है, पर कोई बात नहीं। चमार - सियार डांट - डपट पाते ही रहते हैं। अरे इस पर क्या पड़ी है, चोर - चाई तो रात - रात भर मार खाते हैं और कुछ नहीं बताते।" फिर बाईं आंख को खूबी से दबाते हुए दांत खोल कर हंस पड़े," चलिए साहब, नीच और नींबू की दबाने से ही रस निकलता है!"2 मध्यवर्ग की इस चालाकी और उसके वर्गीय आधार को अमरकांत ने अपनी कहानी में बखूबी अभिव्यक्त किया है। वे भारतीय मध्यवर्ग के स्तरीकरण और उनकी मनोवैज्ञानिक चेतना को बहुत गहराई से पकड़ते हैं। मध्यवर्ग के तीन स्तर होते हैं - उच्च, मध्य व निम्न। इन तीनों वर्गों के सदस्यों का अपना विशिष्ट व्यवहार होता है। अमरकांत जी ने उनके वर्गीय व्यवहार को बहुत ही बारीकी से चित्रित किया है। इस सम्बंध में आलोचक प्रिय दर्शन मालवीय लिखते हैं "मध्यमवर्ग की इन तीनों श्रेणियों की पहचान अमरकान्त की तीन कहानियों में बड़ी सहजता से हो जाती है। यह कहानियां हैं- 'जिन्दगी और जोंक', 'डिप्टी कलेक्टरी' और 'दोपहर का भोजन'। 'जिन्दगी और जोंक' कहानी के शिवनाथ बाबू उच्च मध्यमवर्ग के उदाहरण हैं। जिनका लड़का "रघुवीर एक भिखमंगे की दोनों बाहों को पीछे से पकड़े हुए था और दो-तीन व्यक्ति आँख मूँद कर तथा उछल-कूद कर उस भिखमंगे व्यक्ति को मार रहे थे।" रघुवीर खाए-पीए-अघाए उच्च मध्यमवर्ग का है जिसके सामने कोई संकट नहीं है। वह जिसे मार रहा है उस पर आरोप है कि उसने शिवनाथ बाबू के घर से साड़ी चुराई है। साड़ी चोरी की घटना उच्च वर्ग या उच्च मध्यमवर्ग के घर ही संभव है, क्योंकि मध्यम मध्यमवर्ग के घर एक-आध साड़ी ही बड़ी मुश्किल से मिलेगी जिसे महिलाएं अपने कलेजे से लगा (बड़े सहेज) कर रखती हैं, इसलिए चोरी का प्रश्न ही नहीं उठता है। रघुवीर उच्च वर्ग का भी नहीं है। उच्च वर्ग के व्यक्ति के हाव-भाव से कुलीनता टपकती है (ज़रूरी नहीं कि हो भी।) फिर उच्च वर्ग के पास इतनी फुरसत भी नहीं होती कि इस तरह वो फालतू घूमें। दूसरी बात संवेदना के स्तर पर भी वह (रघुवीर) उच्चमध्यम वर्ग का मालूम पड़ता है। मध्यम मध्यमवर्गीय व्यक्ति इतना संवेदनशील नहीं हो सकता कि एक निर्दोष को मारने के बाद उसको पश्चाताप ना हो और वह यह कहे- चलिए साहब, नीच और नीबू को दबाने से ही रस निकलता है।" 3

'ज़िंदगी और जोंक' के अतिरिक्त तमाम ऐसी कहानियाँ हैं जिसमें अमरकान्त जी ने उच्चवर्णीय मध्यवर्गीय लोगों द्वारा गरीब, दलित तबके के प्रति रची जाने वाली साज़िशों, उनके साथ किए जाने वाले अमानुषिक व्यवहार का प्रामाणिक चित्रण किया है, ठीक वैसे ही जैसे प्रेमचंद ने अपनी कहानी 'सद्गति' में किया है। इस कहानी में पंडित घासीराम ने दुखी चमार से लगन विचारने के बदले बेगार करा कर उसकी जान ले ली, कुछ इसी तरह का व्यवहार ज़िंदगी और जोंक के रजुआ, बहादुर कहानी के पहाड़ी नौकर बहादुर, नौकर कहानी के जन्तू, कुहासा कहानी के दूबर और ऐसे अन्य अनेक पात्रों के साथ भी होता है। इस संदर्भ से यह कहा जा सकता है कि

अमरकान्त ने कहानी का सूत्र कफ़न से नहीं, बल्कि सद्गति से पकड़ा है। अमरकान्त सद्गति की परम्परा के कथाकार हैं। नौकर, बहादुर, कुहासा, दलील, पलाश के फूल, दो चरित्र, महान चेहरा, जनशत्रु जैसी कहानियाँ इस सन्दर्भ से महत्वपूर्ण हैं। हत्यारे कहानी को भी इसी संदर्भ से पढ़ा जाना चाहिए।

जातिभेद और अंतर्जतीय विवाह की समस्या को लेकर उनकी दो कहानियां 'असमर्थ हिलता हाथ' और 'मुक्ति' कहानी का उल्लेख जरुरी है। असमर्थ हिलता हाथ की मीना अपने भाई के मित्र दिलीप से प्रेम करती है जो नीची जाति का है। मीना की माँ लक्ष्मी इस प्रेम के खिलाफ है, ऐसा इसलिए कि लक्ष्मी को भी अपने गाँव के एक लड़के प्यार हुआ था लेकिन वह सफल नहीं हो पाया। उसकी शादी अपनी ही जाति में दूसरे पुरुष के साथ हो गई, उसने जाति धर्म के आगे घुटने टेक दिया, लेखक ने लिखा कि इस आत्मसमर्पण का बदला जीवन भर वह जाति और धर्म के नाम पर दूसरों की भावनाओं को कुचल कर लेती रही। जब लक्ष्मी को मीना के प्रेम के बारे में पता चला तो यह उसके आडम्बरयुक्त सत्ता के समक्ष चुनौती की तरह लगा और उसने मीना को मार पीट कर घर में कैद कर दिया और दिलीप से मिलने की मनाही हो गई। लेकिन बीमार होकर मृत्यु शैय्या पर पड़ने के बाद उसे इस आडम्बर और झूठी नैतिकता की व्यर्थता का एहसास होता है और इस स्थिति में पहुँच कर वह अपनी बेटी मीना को 'अपनी आत्मा की रौशनी के अनुसार अपना रास्ता चुनने' और 'झूठ के पीछे न भागकर सत्य को साहस के साथ ग्रहण करने' की सलाह देना चाहती है। इस कहानी में एक सवर्ण स्त्री के नजरिये से जाति भेद की व्यर्थता और जीवन साथी के चुनाव की आज़ादी का सवाल निहित है, जिसे अमरकांत जी ने एक माँ-बेटी के रुप में दो पीढ़ीयों के वैचारिक द्वन्द्व को मार्मिक कथा के जरिये साकार किया है।

'मुक्ति' कहानी में अमरकांत जी ने एक ऊँची जाति के युवक मोहन की एक छोटी जाति की स्त्री मधु के साथ गैरवैवाहिक प्रेम सम्बन्ध में मोहन की चालाकियों को उदघाटित किया है। जमींदार का बेटा मोहन एक धनी किसान के बेटी से विवाहित है, लेकिन उसकी पत्नी कम पढ़ी लिखी और गँवार है, इसलिए वह उसको पसंद नहीं। इस बीच उसका सम्बन्ध एक छोटी जाति की लड़की मधु से हो जाता है। आठ सालों तक वह उसके साथ सम्बन्ध में रहता है लेकिन उससे विवाह नहीं करता,और एक दिन अपने ससुराल जाकर जब उसे पता चलता है कि उसकी पत्नी एम ए पास कर चुकी है और उसके भाई की मृत्यु होने के कारण ससुर की सारी संपत्ति उसके नाम होने वाली है, तब उसके भीतर पत्नी का प्रेम जाग उठता है। वापस मधु के पास जाकर उसे अपनी जाति का कोई लड़का देखकर शादी कर लेने की सलाह देता है। मधु इस बात पर हैरान होकर उसे उसके प्रतिज्ञाओं की याद दिलाती है तब मोहन अपनी घिनौनी जातिवादी सोच को उजागर करते हुए कहता है -" हां - हां मैं धोखेबाज हूं। शायद तुमको इसका घमंड है कि तुमने मेरे लिए बड़ा त्याग किया है। लेकिन, त्याग तुमने नहीं, मैने ही किया है। तुमको तो लाभ ही लाभ हुआ...तुम लोगों में तो यह सब होता ही है । तुम्हारे पास न धन - दौलत थी, न प्रतिष्ठा ही... हां, नुकसान मेरा हुआ, तुम्हारी वजह से मैंने अपने पवित्र आचरण को नष्ट किया, अपनी जाति भ्रष्ट की, अपनी जायदाद छोड़ी, देवी की तरह पवित्र स्त्री को त्यागा...। "4 यह कहानी अंतर्जतीय प्रेम सम्बन्ध में उच्च जातीय सवर्ण पुरुष के अवसरवादिता को उजागर करती है। इसी तरह की कहानी है 'पलाश के फूल'। जमींदार नवल किशोर राय अपने खेत के दलित मजदूर की बेटी को साजिशन अपने प्रेम जाल में फंसा कर उसका दैहिक शोषण करता है, और जब वह स्त्री उसकी संपत्ति में अपने अधिकार की मांग करती है तो उसे वह दूध की मक्खी की तरह फेंक देता है। लेकिन कहानी का मर्म यहाँ है कि अपनी इस नीच हरकत को वह भगवान के नाम पर जायज ठहराने की कोशिश करता है, अपने मित्र से इस पाखंड का ज़िक्र करते हुए वह कहता है कि मैंने उस 'फाहशा'

औरत से पीछा छुड़ा लिया, क्यूंकि ऐन मौके पर भगवान ने मुझे सही रास्ता दिखाया और मै एक दिन चुपके से उसे छोड़ कर अपने बीवी- बच्चों के पास आ गया और फिर कभी उधर नहीं गया। अमरकांत जी ने बेहद साधारण शिल्प में उत्पीड़क के मुंह से ही उत्पीड़न की सच्चाई का बयान करवा दिया है। मजेदार यह है कि कहानी का पात्र नवल किशोर जो उत्पीड़क है, खुद को पीड़ित (विक्टिम) की तरह प्रस्तुत कर रहा है, लेकिन कहानी की सफलता इस बात में है कि इसे पढ़ते हुए पाठक के सामने उसका पाखंड और नीचता स्पष्ट नजर आने लगती है।

इन कहानियों को पढ़ते हुए यह लगता है कि लेखक के लिए इनका कथानक महत्वपूर्ण नहीं बल्कि वह विचारप्रक्रिया महत्वपूर्ण है जो यहाँ अभिव्यक्त हुई है। यहाँ पर कथातत्व और कथा में रची जाने वाली परिस्थिति बेहद सरल और सपाट नजर आती है, पर पात्रों की मन:स्थिति कथा के केंद्रीय भाव को स्पष्ट कर देती है।पलाश के फूल, मुक्ति, दलील इत्यादि कहानियों में कोई विशेष घटना घटित नहीं होती, परिस्थितियों का द्वन्द्व भी नहीं है लेकिन अपनी सहजता और मामूलीपन के साथ ये कहानियां अपने मकसद तक पहुँचती हैं। वह मकसद है कि सवर्ण, सामंती - मध्यवर्गीय, पुरुष सत्ता के आतंरिक बुनावट, उसके मनोविज्ञान और शोषण की यांत्रिकी को सामने लाना।

अमरकान्त के गद्य में व्यंग्य की अन्तर्धारा होती है। व्यंग्य उनकी देह-भाषा में अन्तर्गुम्फित होता है। यह उनके गद्य की भाषा, शैली, चाल-चलन में अन्तर्निहित होता है। व्यंग्य उनकी कहानी में बहुत सहजता से आता है, इसमें कोई बनावटीपन नहीं होता है। यह उनकी गद्य की भाषा में इस तरह घुला रहता है, जैसे दूध में चीनी या दूध में पानी। यह पानी में तेल की तरह ऊपर-ऊपर तैरता नहीं रहता है। अमरकान्त के व्यंग्य जीवन की छोटी-छोटी बातों से उपजते हैं, उन्हें किसी बड़ी घटना की दरकार नहीं होती। अमरकांत के व्यंग्य के बारे में प्रियदर्शन मालवीय लिखते हैं - " तंज कसने में अमरकान्त का कोई सानी नहीं है। वाक्य में एकाध शब्द ऐसे डाल देते हैं, जो वाक्य को एक ताने के रूप में तान देते हैं- जैसे 'फर्क' कहानी में वे भीड़ पर तंज कसते हैं, 'भीड़ जबरदस्त नैतिक आक्रोश में उबल रही थी।' इस वाक्य में 'नैतिक आक्रोश' शब्द का प्रयोग करके अमरकान्त आमजनता की नैतिकता पर भी प्रश्न खड़ा करते हैं, उस पर ताना कसते मालूम पड़ते है। कि जो जनता अपने नेताओं के करोड़ों-अरबों के घोटालों को माफकर के अपना प्रतिनिधि चुनती है, वही एक मामूली से चोर के चोरी करने पर नैतिक आक्रोश से उबलने लगती है। यदि जनता इसी तरह के नैतिक आक्रोश से अपने जन-प्रतिनिधि चुनते समय उबलने लगें तो देश की सूरत बदल जाये। मगर जनता के दोहरे मानदण्ड होते हैं, यदि सामने वाला सक्षम और ताकतवर है तो उसका व्यवहार एकदम बदल जाता है। कहानी के दूसरे हिस्से को पढ़ने से यह बात और साफ हो जाती है। कहानी के दूसरे हिस्से में 'सुखई' नामक डाकू प्रगट होता है। एकदम से बातचीत की भाषा बदल जाती है। उनकी टोन में आदर का भाव आ जाता है।"5

अमरकांत जी ने अपने लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण की आधार भूमि के बारे में बताते हुए अपने आत्मकथ्य में तीन प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है, जिनकी वजह से उनकी आँखों के सामने से रोमांटिसिज़्म का रंगीन पर्दा हट गया। पहली प्रक्रिया है - समाज और इतिहास के अंतर्विरोध। यह अंतर्विरोध उन्हें रजुआ के जीवित चरित्र के माध्यम से नजर आया। जिसके बारे में उन्होंने लिखा - "काला भुजंग, नाटा, गंदा, बदबूदार, डरपोक, हास्यास्पद, हर स्थिति में जीने वाला, आत्म समर्पण वाली होशियारी से हर स्थिति को स्वीकार करने वाला - एक प्रतिशत इंसान। आधा फीसदी नंबर तो मनुष्य शरीर मिलने से ही मिल जाता है और शेष आधा फीसदी में आत्म अधिकार,

Vol. 2, Issue-2 (April-June, 2026), pp.138-144, ISSN: 3107-5088, www.cognitivethinking.in

चेतना, भावनाएं आदि हैं। सदियों से उसे इतिहास ने इतना ही दिया है और उसी पूँजी को कलेजे से चिपकाये वह जीवित रहने का ढंग सीख गया है। समाज में ऐसा भयंकर अंतर्विरोध क्यों है?"6

दूसरी प्रक्रिया में उन्होने भारत की स्वतंत्रता के साथ हुए देश विभाजन की त्रासदी का ज़िक्र किया है। अमरकांत जी ने सन बयालिस के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रुप से भाग लिया था, और इसके लिए उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी। बयालिस के आंदोलन के दमन, नेताओं की गिरफ़्तारी के बाद बिखराव और विभ्रम और नेताओं की अवसरवादिता ने उन्हें गहरी निराशा और मोहभंग की स्थिति में डाल दिया था, इसके बावजूद वे देश की आज़ादी के उद्देश्य के प्रति समर्पित रहे। लेकिन आज़ादी के साथ हुए देश के बंटवारे और सांप्रदायिक रक्त पात ने उन्हें सोचने को मजबूर कर दिया -" विभाजन होता क्यों है? साम्राज्यवाद, संप्रदायवाद तथा नयस्त स्वार्थों के सहयोग से विभाजन होता है और जब तक इनका प्रभाव खत्म नहीं होता, विभाजन का खतरा बार-बार उपस्थित होगा । " 7 तीसरी प्रक्रिया के बारे में वे कहते हैं कि आज़ादी मिलने के बाद बहुत से लोगों ने चोला बदल लिया। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, गुटबाज़ी और कोटा - परमिट राज का बोलबाला हो गया। इन परिस्थितियों में आजादी की लड़ाई के मूल्य और आदर्श कहीं गुम हो गए। नई कहानी के यथार्थबोध और संवेदना की निर्मिति के सन्दर्भ में इस प्रक्रिया को राजेंद्र यादव इस प्रकार व्याख्यायित करते हैं -"यों इस प्रकार का यथार्थ, या मानवीय सम्बन्धों और सामाजिक मूल्यों के विघटन का ऐसा प्रारम्भ आज ही हुआ हो, ऐसा नहीं है। समाज जब अपनी एक अवस्था (फ्रेज़) से दूसरी अवस्था में अतिक्रमित होने लगता है, तभी यह प्रक्रिया शुरू हो जाती है। युद्ध के द्वारा चूँकि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया झटके के साथ अपना चक्र पूरा कर लेती है, इसलिए इस परिवर्तन या विघटन की ओर सहसा ही सबका ध्यान खिंच जाता है। हमारे यहाँ भी युद्ध, स्वतंत्रता और विभाजन ने, मूल्यों के इस परिवर्तन को एक अभूतपूर्व तेज़ी दी। सारे मान्य, स्वीकृत सम्बन्धों की जो गरिमा उन दिनों टूटी वह निरन्तर टूटती ही रही। उनका बिखराव पहले परिस्थिति और भूगोलगत था, फिर मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्तरों पर चलने लगा और ऐतिहासिक दौर के इस कहानीकार को हम इस सच्चाई को चित्रित करते हुए पाते हैं।"8

इन तीन प्रक्रियाओं के प्रभाव में अमरकान्त भारतीय समाज के अवसरवादी, पाखंडी , जातिवादी और सांप्रदायिक तत्वों के पाखंड को उजागर करने वाले कथाकार के रुप में सामने आये। नई कहानी के अन्य लेखकों की तरह उन्होने मध्यवर्ग की आत्मकेंद्रीयता, आत्ममुग्धता और अंतरमुखी चेतना को महिमामंडित नहीं किया बल्कि इस तबके की अंतर्निहित कमजोरियों और सुविधाभोगी कृतघ्नता को उद्घाटित किया है। उन्होने प्रेमचंद, गोर्की, टालस्टाय और चेखव जैसे लेखकों की यथार्थवादी और व्यंग्यमिश्रित गहन आलोचनात्माक दृष्टि का अनुसरण किया। आलोचक प्रियदर्शन मालवीय लिखते हैं - " विश्वनाथ तिवारी ने उचित ही अमरकांत को हिंदी का चेखव कहा है। अमरकांत की कहानी चेखव की कहाानयों की तरह छोटी-छोटी होती हैं जिनमे अनावश्यक विस्तार नहीं होता है। इनमें एक खास तरह का पैनापन होता है और जीवन की गहरी अंतर्दृष्टि होती है। अमरकांत की कहनियों में जीवन अपनी गति से चलता रहता है, शांत - जल की तरह, जिसमें कहानीकार एक कंकड़ फेंकता है, जो हमारे मस्तिष्क में हिलोरे पैदा करता है। "9

निष्कर्ष - आज़ाद भारत में आजादी के मूल्यों की बदहाली के बीच इन महान लेखकों के साहित्य ने अमरकांत को निम्न वर्ग के प्रति प्रतिबद्ध और पढ़े- लिखे मध्यवर्ग के दुचित्तेपन का आलोचक के रुप में आकार दिया। मैक्सिम गोर्की ने चेखव के श्रद्धांजलि लेख में उनके लिए लिखा है - " बेहद सादा जैसा वह (चेखव) खुद था उसी तरह हर सादा, सत्य और सहृदय वस्तु को प्यार करता था..... हर उसे चीज से घृणा करते हुए जो गंदी है, कुत्सित है उसने

जिंदगी की सारी अधमताओं को एक कवि की शिष्ट भाषा में एक व्यंग्यकार की मधुर मुस्कान के साथ अंकित कर दिया है।"10 यही बातें अमरकांत के लेखन के बारे में भी कही जा सकती हैं। अमरकांत हिंदी कथा साहित्य के चेखव हैं, यह बात कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ सूची -

1- संपादकीय, समकालीन चुनौती, फरवरी- 2018, संपादक - राजेंद्र कुमार

2- जिंदगी और जोंक कहानी, ले. अमरकांत

3-सादगी का सौंदर्य, अमरकांत की कहानियों का अनुशीलन, ले. प्रियदर्शन मालवीय, पृ. सं 41, अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज, 2024

3- मुक्ति कहानी, ले. अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृष्ठ 279, अमर कृतित्व प्रकाशन, सी - 862, गुरु तेग बहादुर नगर, करेली, इलाहाबाद, उ. प्र.

5 - सादगी का सौंदर्य, अमरकांत की कहानियों का अनुशीलन, ले. प्रियदर्शन मालवीय, पृ. सं 115

6- वही, आत्मकथ्य, देश के लोग और वह

7 - वही

8 - सादगी का सौंदर्य, अमरकांत की कहानियों का अनुशीलन, ले. प्रियदर्शन मालवीय, पृ. सं 9, अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज, 2024

9 - भूमिका : एक दुनिया समानान्तर, ले. राजेंद्र यादव, पृ. सं 27, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2025

10 - एंटन चैखव : एक इंटरव्यू, ले. राजेंद्र यादव, रामपुरिया प्रकाशन, 3 उड़बर्न रोड, कलकत्ता - 20, प्रथम संस्करण - 1955

Declaration by Author (s): *"I hereby declare that this manuscript is my original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy."* डॉ. रामायन राम